जन वाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

‘‘ किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं ’’

–सफ़दर हाश्मी

अमरीकी कहानीकार ऑस्कर वाइल्ड की मार्मिक कहानी ‘दी सेल्फिश जायंट’ का हिंदी रूपांतरण। यह कहानी एक भयानक राक्षस और एक निरीह बच्चे की है। बच्चा अपनी सरलता, सहजता से राक्षस को अत्यंत मानवीय और दयालु बना देता है। दिल को छू लेने वाली दुनिया की जानी-मानी क्लासिक।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य: 10 रुपए **B - 10** Price: 10 Rupees

स्वार्थी राक्षस

ऑस्कर वाइल्ड

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

स्वार्थी राक्षस: ऑस्कर वाइल्ड
The Selfish Giant : Oscar Wilde
प्रस्तुति: अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित,
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन : पंकज झा
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1997, 1999, 2000,
2002, 2003

मूल्य: 10 रुपए
Price : 10 Rupees

Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs@vsnl.net

स्वार्थी राक्षस

ऑस्कर वाइल्ड

स्वार्थी राक्षस

दोपहर को स्कूल से वापिस आने के बाद सभी बच्चे राक्षस के बाग में जाकर खेलते थे।

वह नरम हरी घास वाला एक बड़ा और सुंदर बाग था। घास के ऊपर इधर-उधर कई सितारेनुमा फूल खिल रहे थे। बाग में बारह आड़ू के पेड़ भी थे, जिनमें वसंत के समय नाज़ुक गुलाबी कलियां फूट पड़ती थीं। पतझड़ आते-आते उनमें बड़े रसीले फल लगते थे। पेड़ों की टहनियों पर बैठी चिड़िए इतने सुंदर सुर में गाती थीं, कि बच्चे उन्हें सुनने के लिए अपना खेल बंद कर देते थे। ''यहां हम कितने खुश हैं,'' वह एक दूसरे से कहते।

एक दिन राक्षस वापिस लौट आया। वह अपने एक दोस्त से मिलने गया था। वह उसके साथ सात साल रहा। सात साल में उसे जो कुछ भी कहना था उसने कह डाला। अब क्योंकि उसके पास कुछ और कहने को नहीं बचा था, इसलिए वह अपने महल में लौटने को उत्सुक था। जब वह वापिस आया तो उसने अपने बाग में बच्चों को खेलते देखा।

''तुम सब यहां क्या कर रहे हो?'' वह अपनी भारी आवाज़ में चिल्लाया। यह सुन कर सारे बच्चे वहां से भाग गए।

''यह मेरा बाग है और यह सिर्फ मेरे अपने लिए है,''

राक्षस ने कहा, ''इस बात को कोई भी आसानी से समझ सकता है। मैं इस बाग में अपने अलावा किसी और को नहीं खेलने दूंगा।'' फिर उसने बाग के चारों ओर एक ऊंची सी चारदीवारी बनाई और उसके बाहर एक नोटिस बोर्ड टांग दिया—

अंदर घुसने वालों के खिलाफ उचित कार्यवाही की जायेगी।

वह एक बहुत स्वार्थी राक्षस था।

अब गरीब बच्चों को खेलने के लिए और कोई जगह नहीं

बची। उन्होंने सड़क पर खेलने की कोशिश की परंतु सड़क पर उड़ती धूल और नुकीले पत्थरों से वह जल्द ही तंग आ गए। बच्चे पढ़ाई खत्म होने के बाद उस ऊंची चारदीवारी का चक्कर लगाते और उसके अंदर स्थित सुंदर बाग की बातें करते रहते ''हम लोग बाग में कितने खुश थे,'' वह एक दूसरे से कहते। तभी वसंत का मौसम आया और सभी जगह छोटे-छोटे फूल खिलने लगे और नन्ही-नन्ही चिड़िए चहकने लगीं। केवल उस स्वार्थी राक्षस के बाग में अभी भी जाड़ा था। उस बाग में क्योंकि बच्चे नहीं थे इसलिए वहां पर चिड़ियों ने चहकना बंद कर दिया और कलियों ने खिलना छोड़ दिया। एक खूबसूरत फूल ने मिट्टी से बाहर अपना सिर ज़रूर निकाला, पर जब उसने नोटिस देखा तो उसे बच्चों के प्रति इतनी दया आई कि वह दुबारा मिट्टी की चादर ओढ़ कर सो गया।

अगर खुश थे तो सिर्फ दो लोग—बर्फ और सर्द हवा। ''वसंत तो इस बाग में आना ही भूल गया है इसलिए हम दोनों

ही यहां पर पूरे साल डेरा जमायेंगे।'' बर्फ की दूधिया चादर ने घास को पूरी तरह ढंक दिया था और सर्द हवा के झोंकों से पेड़ों की हड्डियां कांप रही थी। ''कितनी मस्त जगह है यह,'' हवा ने कहा, ''हमें ओलों को भी बुलाना चाहिए।'' फिर क्या था, हर रोज तीन घंटे मोटे-मोटे ओले बरसते। ओलों ने महल की छत के सभी स्लेट-पत्थरों को तोड़ डाला।

''कुछ समझ में नहीं आता कि वसंत अब तक क्यों नहीं आया,'' स्वार्थी राक्षस ने खिड़की के बाहर अपने ठंडे-सफेद बाग को देख कर कहा, ''मुझे उम्मीद है कि जल्दी ही मौसम बदलेगा।''

परंतु न तो कभी वसंत आया और न ही आई गर्मी। पतझड़ में बाकी सभी बागों में सुनहरे रसीले फल लगे, परंतु राक्षस के

बाग में एक भी फल नहीं लगा। पतझड़ ने कहा, ''यह राक्षस बहुत स्वार्थी है।'' इसीलिए राक्षस के बाग में बर्फ और ओले ही गिरते और उत्तरी सर्द हवा पेड़ों के बीच दिन भर नाचती।

एक दिन राक्षस जब अपने पलंग पर लेटा था तो उसे एक मधुर संगीत सुनाई पड़ा। वह धुन इतनी सुंदर थी कि एक बार तो उसे ऐसा लगा कि मानो राजमहल के संगीतज्ञ वहां से गुज़र रहे हों। दरअसल, एक छोटी सी चिड़िया उसकी खिड़की के बाहर गा रही थी। राक्षस ने क्योंकि कई सालों से चिड़ियों का गाना नहीं सुना था इसलिए उसे यह दुनिया का सबसे मधुर संगीत लग रहा था। तभी उसके सिर पर ओलों का गिरना बंद हुआ और सर्द हवा का नृत्य भी बंद हो गया। उसी समय एक प्यारी खुशबू की बयार उसकी खिड़की में से आई। ''मुझे लगता है कि अब वसंत आ ही गया है,'' राक्षस ने कहा। फिर वह पलंग से उठ कर बाहर झांकने लगा।

उसे क्या दिखाई पड़ा?

उसे एक अत्यन्त सुंदर दृश्य दिखाई दिया। दीवार के एक छोटे छेद में से कई बच्चे बाग में घुस आए थे और वह पेड़ों की टहनियों पर बैठे हुए थे। वह जिस पेड़ को देखता वहीं उसे एक छोटा बच्चा बैठा दिखाई देता। पेड़, बच्चों को वापिस पाकर बेहद खुश थे और उनकी कलियां खिलखिला कर हंस रही थीं। पत्ते हिल-हिल कर बच्चों का अभिनंदन कर रहे थे। चिड़िए भी मस्ती में उड़ रही थीं और खुशी से चहक रही थीं। रंग-बिरंगे

फूल अब हरी घास के झुरमुटे से सिर उठा कर झांक रहे थे और मुस्कुरा रहे थे। बेहद मनोरम दृश्य था। केवल एक कोने में अब भी जाड़ा था।

बाग के सबसे दूर के इस कोने में एक छोटा सा लड़का खड़ा था। वह इतना छोटा था कि उसके हाथ पेड़ की टहनियों को छू नहीं पा रहा थे। वह उन्हे पकड़ने के लिए बार-बार कूद रहा था और असफल होने के कारण ज़ोर-ज़ोर से रो रहा था। वह पेड़ अभी भी बर्फ से लदा था और सर्द हवा उसकी शाखाओं के बीच तांडव नृत्य कर रही थी। ''चढ़ो बेटा,'' पेड़ ने लड़के से कहा और फिर पेड़ ने अपनी शाखाओं को बहुत नीचे झुका दिया। परंतु वह लड़का बहुत छोटा था।

यह सब देख कर राक्षस का दिल पिघल गया। उसने कहा,

''मैं कितना स्वार्थी हूं। अब मुझे पता चला कि वसंत मेरे बाग में क्यों नहीं आया। मैं उस छोटे लड़के को पेड़ के ऊपर बैठा दूंगा। उसके बाद मैं इस चारदीवारी को तोड़ कर गिरा दूंगा, जिससे बच्चे मेरे बाग में हमेशा-हमेशा के लिए खेलते रहें।'' उसे अपने किये पर बहुत पछतावा हो रहा था।

वह दबे पांव सीढ़ियां उतरा और आहिस्ते से दरवाज़ा खोल कर बाहर बाग में पहुंचा। परंतु जैसे ही बच्चों ने उसे देखा वह डर के मारे वहां से भाग गए और बाग में एक बार फिर से ठंडा जाड़ा छा गया। सिर्फ वह छोटा लड़का नहीं भागा। उसकी

आंखें आंसुओं से इतनी भीगी थीं कि उसको सामने से आता राक्षस दिखाई ही नहीं दिया। राक्षस चुपके से उसके पीछे गया और उसने उस लड़के को प्यार से उठा कर पेड़ पर बैठा दिया। और तुरंत ही पेड़ में फूल खिल उठे और चिड़िए उन पर आकर चहचहाने लगीं।

छोटा लड़का इतना खुश हुआ कि उसने अपने दोनों हाथ फैलाए और राक्षस के गले में डाल दिए। फिर उसने राक्षस का गाल चूमा। बाकी बच्चों ने जब यह सब कुछ देखा तो उन्हें लगा कि राक्षस अब बदल गया है। सब बच्चे दौड़े-दौड़े वापिस आए

और उनके साथ-साथ फूलों की सौगात लिए वसंत आया।

''बच्चों, यह बाग अब तुम्हारा है,'' राक्षस ने कहा। इतना कह कर उसने अपनी भारी कुल्हाड़ी उठाई और पूरी चारदीवारी तोड़ डाली। दोपहर को बारह बजे जब सब लोग बाज़ार जा रहे थे तब उन्हें बगीचे में बच्चों के साथ खेलता हुआ राक्षस दिखाई पड़ा। ऐसा सुंदर दृश्य उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। सारा दिन बच्चे बाग में मज़े में खेले। शाम को घर जाने से पहले वह राक्षस से मिलने पहुंचे।

''तुम्हारा वह छोटा दोस्त कहां है?'' राक्षस ने पूछा, ''वही लड़का जिसको मैंने पेड़ पर बिठाया था।'' क्योंकि उसने राक्षस का गाल चूमा था इसीलिए वह छोटा लड़का राक्षस को सबसे अधिक प्रिय था।

''हमें पता नहीं,'' बच्चों ने जवाब दिया, ''वह जल्दी ही चला गया था।''

राक्षस ने कहा, ''तुम उससे कहना कि कल वह ज़रूर आए।'' परंतु बच्चों ने उसे पहले कभी नहीं देखा था और उसका पता भी उन्हे नहीं मालूम था। यह सुन कर राक्षस बहुत उदास हो गया।

रोज़ दोपहर को स्कूल खत्म होने के बाद बच्चे बाग में आते और राक्षस के साथ खेलते। परंतु वह छोटा जिसे राक्षस बहुत प्यार करता था दुबारा कभी दिखाई नहीं पड़ा। राक्षस बच्चों के प्रति दयालु था लेकिन उसे उस छोटे लड़के की बहुत याद सताती थी। ''उससे मिलने का मेरा बड़ा मन है,'' वह कहता। इस तरह बहुत साल बीत गए और बेचारा राक्षस अब बूढ़ा और कमज़ोर हो गया। उससे अब खेलते नहीं बनता था, इसलिए

वह एक बड़ी सी आराम-कुर्सी पर बैठे-बैठे ही बच्चों को खेलते देखता और अपने बाग को निहारता था। ''मेरे बाग में बहुत से सुंदर फूल हैं,'' वह कहता, ''परंतु इनमें सबसे सुंदर फूल तो यह बच्चे ही हैं।''

सर्दियों की एक सुबह, कपड़े पहनते समय उसने खिड़की के बाहर झांका। अब उसे सर्दी से कोई डर नहीं लगता था। उसे पता था कि सर्दी में वसंत सोता है और फूल आराम करते हैं। अचानक उसे कुछ दिखाई पड़ा। उसने अपनी आंखों को रगड़ा और अचरज से टकटकी लगाए देखता ही रहा। बाहर एक

अभूतपूर्व दृश्य था। बाग के कोने में एक पेड़ सफेद सुंदर फूलों से लदा था। उसकी डालियों से सुनहरे और रुपहले फल लटके थे और उसके नीचे वही छोटा लड़का खड़ा था, जिसे वह बहुत चाहता था।

राक्षस खुशी से दौड़ता हुआ नीचे उतरा और बाग में पहुंचा। घास को रौंदता हुआ वह उस बालक के पास पहुंचा। बच्चे के पास पहुंचते ही राक्षस का चेहरा गुस्से से तमतमाने लगा और उसने पूछा, ''तुम्हे मारने की हिम्मत किसने की?'' क्योंकि बच्चे की दोनों हथेलियों पर दो कीलों के घाव थे। उसके छोटे पैरों में भी दो कीलों के निशान थे।

''तुम्हे मारने की हिम्मत किसने की?'' राक्षस चिल्लाया, ''मुझे बताओ। मैं उसे अपनी बड़ी तलवार से अभी ठिकाने लगा दूंगा।''

''नहीं,'' बच्चे ने उत्तर दिया, ''यह घाव प्यार के घाव हैं।''

''तुम कौन हो?'' राक्षस ने पूछा। राक्षस मंत्रमुग्ध हो देखता रहा और फिर वह छोटे बच्चे के सामने घुटने टेक कर बैठ गया। बच्चा राक्षस को देख मुस्कुराया और उसने कहा, ''तुमने एक दिन मुझे अपने बाग में खेलने की इज़ाजत दी थी। मैं आज तुम्हें अपने बाग में ले जाऊंगा जो कि ज़न्नत (स्वर्ग) में है।''

और उस दोपहर को जब बच्चे दौड़-दौड़ आए तो उन्होंने मरे राक्षस को पेड़ के नीचे लेटा हुआ पाया। उसका शरीर सफेद फूलों से ढंका था।

❐❐❐❐